उसने कहा था

यह कहानी ~~प्रथम~~ विश्वयुद्ध की ~~पृष्ठ~~ पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानी है। कहानी का आरंभ अमृतसर के एक बाजार से होता है। ~~(समय है 19वीं शताब्दी का अंतिम दौर संभवतः 1910 के आस-पास)~~

12 वर्षीय लड़का और 8 वर्षीय लड़की की मुलाकात होती है। दोनों सिख हैं। लड़का लड़की से पूछता है – "तेरी कुड़माई हो गयी"। लड़की धत कहती है और भाग जाती है। दोनों में थोड़ी पहचान होती है। मिलने का सिलसिला लगभग एक महीने तक चलता रहता है लड़का हर बार इसी तरह पूछता है - 'तेरी कुड़माई हो गई' लड़की जवाब देती है धत्। इसी पूछने और बताने में एक अनकहा प्यारा संबंध आकार लेने लगता है जिसे दोनों अपनी छोटी उम्र के कारण नहीं जान पाते। एक दिन इसी तरह मिलने पर जब लड़का फिर से वही सवाल करता है कि तेरी कुड़माई हो गयी तो लड़की जवाब देती है - 'हाँ हो गयी, कब? कल - देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।'

यह सुनते ही लड़के को आघात लगता है। वह पहले तो समझ नहीं पाता फिर धीरे-धीरे उसकी मनोदशा बदल जाती है और वह पूरे रास्ते आने जाने वाले से जबरदस्ती झगड़ पड़ता है।

कहानी का पहला भाग यहीं समाप्त हो जाता है।

कहानी का दूसरा भाग इस घटना के लगभग पच्चीस वर्ष की घटनाओं के बाद शुरू होती है प्रथम विश्वयुद्ध का काल। फ्रांस में भारतीय सैनिक इंग्लैंड की ओर से जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिए तैनात किये गये थे।

यहाँ लहना सिंह इस कहानी का पहला पात्र हमारे सामने आता है।

युद्ध के मोर्चे पर डटे सिपाही खन्दक में पड़े-पड़े ऊकता गये हैं। लहना सिंह चाहता है कि इस तरह पड़े रहने से अच्छा है, जल्दी से जल्दी लड़ाई शुरू हो, चाहे उसके लिए हमें स्वयं ही जर्मन फौज पर हमला क्यों न करना पड़े। लहना सिंह का यह उतावलापन जहाँ उसके साहस को दिखाता है वहीं उकताहट की स्थिति को भी बताता है।

सूबेदार हजारा सिंह का बेटा बिमार है और लहना सिंह उसका काफी ध्यान रखता है रात भर भी उसकी देखभाल करता है लेकिन लहना सिंह बोधा सिंह का इतना ध्यान क्यों रखता है यह आगे पता चलेगा।

सिपाहियों के आपसी बातचीत से यह पता चलता है कि ये सिपाही किसान परिवार के हैं उनके सपने भी किसान जीवन से जुड़े हैं। लहना सिंह की इच्छा है कि मैं अपने भाई कीरतसिंह की गोद में आम के बगीचे में मरूँगा।

सैनिकों के आपसी बातचीत से दूसरा भाग खत्म हो जाता है

यह कहानी एक लक्ष्यपरक कहानी है। यह कहानी निस्वार्थ प्रेम पर आधारित है। गुलेरी जी का लहना सिंह प्रेम को पाने में नहीं बल्कि प्रेम को शुद्ध-पवित्र कर्तव्य का निर्वाह करता है।

130-236 WK 19

09 MAY • SATURDAY

2020 APRIL

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
			1							8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30									

तीसरे भाग में कहानी फिर एक नया मोड़ लेती है।
9 पहले दो भाग कहानी की पृष्ठभूमि और उसके पात्रों से परिचय कराती है।

10

यहाँ लपटन साहब नाम के एक नये पात्र का प्रवेश
11 होता है जो हजारासिंह को आदेश देता है कि वह एक मील आगे पचास जर्मन सैनिकों की टुकड़ी पर
12 धावा बोले और उसके लिए वह दस सैनिकों को छोड़कर बाकी सभी को अपने साथ ले
1 जाता है।

बोधासिंह की बिमारी के कारण सूबेदार की इच्छा
2 समझकर लहनासिंह वहीं रह जाता है। अकस्मात लहनासिंह समझ गया कि वह अंग्रेज नहीं कोई
3 जर्मन जासूस है।

कहानी का तीसरा भाग यहाँ समाप्त हो जाता है।

यहाँ लहना सिंह अपनी बुद्धिमता का परिचय देता है और बिना देर किए एक सिपाही को हजारासिंह के पास भेजता है और खुद उस जर्मन से भिड़ जाता है।

10 SUNDAY

सत्तर जर्मन उस खाई पर हमला कर देते हैं, लहनासिंह राइफल से उसका सामना करता है।

अभीर जब सूबे घायल होने के बावजूद वह खुद नहीं जाता, पहले हजारासिंह और बोधा सिंह को भेज देता है।

कहानी का पाँचवा भाग यह अंतिम भाग भी है।
यह कहानी का सबसे महत्वपूर्ण अंश है।

लहना सिंह खाई में पड़ा है और अंतिम साँसे ले रहा है। उसके साथ उसका साथी वजीरा सिंह है। उसे एक-एक कर अतीत की घटनाएँ याद आने लगती हैं कहानी फ्लैशबैक में चली जाती है

उसे बचपन की वह घटना याद आती है जब उसने अमृतसर के बाजार में एक लड़की से पूछा था- तेरी कुड़माई हो गयी। लेकिन 25 साल बाद उसी लड़की से लहनासिंह की मुलाकात होती है जो अब सूबेदार हजारासिंह की पत्नी है एक जवान बेटे बोधा सिंह की माँ है

उसके बाद लहनासिंह को सूबेदारनी के साथ हुई बात याद आती है - सूबेदारनी उसे याद दिलाती है कि बचपन में उसने एक बार अपनी जान जोखिम में डालकर उसे बचाया था। वह लहना सिंह से प्रार्थना करती है कि वह उसी तरह उसके पति और पुत्र की रक्षा करे।

लहना सिंह शायद बच सकता था अगर वह हजारासिंह और बोधा सिंह को भेजने की बजाय खुद अस्पताल की गाड़ी से चला जाता क्योंकि उसकी हालत ज्यादा खराब थी। लेकिन वह अपने घावों को छुपाकर जबरदस्ती सूबेदार और बोधा सिंह को भेज देता है। और खुद पीछे रह जाता है और अंत में मर जाता है

ब्रिटिश सेना के लिए लहनासिंह की मौत अत्यंत साधारण मौत है- "मैदान में घावों से मरा" इस तरह यह कहानी लहनासिंह के त्रासद अंत के साथ सफल हो जाती है